आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृतियां

(संवत 1050 से 1375 विक्रमी संवत)

प्रस्तुतकर्ता

- ओम प्रकाश रविदास

PPT for Syllabus 2018 CBCS Sem:-I (G) paper CC 1 "Hindi sahitya ka itihaas" entitled as "Aadikalin sahitya ki samanya pravrittiyan"
dated:- 04/08/2021

१. संदिग्ध रचनाएं-

खुमान रासो ,बीसलदेव रासो ,पृथ्वीराज रासो ,परमाल रासो , ये ग्रंथ घटनाओं की दृष्टि से ,समय की दृष्टि
से ,भाषा की दृष्टि से व पात्रों की दृष्टि से संदिग्ध हैं।

हम्मीर रासो अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है, केवल प्राकृत- पैंगलम में प्राप्त 8 छंदो के आधार पर ही उसकी कल्पना चली आ रही है।

2. आश्रयदाताओं की प्रशंसा-

इस काल के कवियों ने अपने आश्रय दाता राजाओं की अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा की यानी उन्हें राम ,कृष्ण ,नल,युधिष्ठिर आदि से भी उत्कृष्ट एवं सर्वविजेता दिखाया।

उन्हें कभी भी पराजित या कायर नहीं दिखाया।
स्वर्ण मुद्राओं के लोभ में इन कवियों ने अपने राजाओं का झूठा यशोगान किया तथा उन्हें प्रसन्न करने के लिए शृंगारिकता का भी वर्णन किया।

३. ऐतिहासिकता का अभाव-

इन रचनाओं में इतिहास प्रसिद्ध चरित्र नायकों को लिया गया है किंतु उनका वर्णन शुद्ध इतिहास की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

इन कवियों द्वारा दी गई तिथियां इतिहास से मेल नहीं खातीं।
यहां इतिहास की अपेक्षा कल्पना अधिक है।

४. युद्धों का सजीव वर्णन-

इसका एक कारण यह भी है कि एक कवि स्वयं युद्ध क्षेत्र में अपना रण कौशल अवसर आने पर प्रदर्शित करते थे।

सभी घटनाएं प्रत्यक्ष देखते थे।

५. संकुचित राष्ट्रीयता-

उस समय राष्ट्र शब्द से पूरे भारत का अर्थ नहीं लिया गया।

उस समय के राजाओं ने अपने प्रदेश एवं राज्य को ही राष्ट्र समझ रखा था तो फिर उनके आश्रित कवियों को भी उन्हीं पद चिन्हों पर चलना था।

राजाओं का आपसी संघर्ष ही राष्ट्रीयता की भावना में सबसे बड़ा बाधक बना।

६. वीर काव्य तथा श्रृंगार रस काव्य -

इस काल के काव्य में बच्चे और भेद सभी में युद्ध के लिए एक अदम्य उत्साह देखा जा सकता है-

बारह बरस ले कुकुर जिये ,तेरह जिये सियार।
बरस अठारह छत्रिय जिए, आगे जीवन को धिक्कार।

वीर - पृथ्वीराज रासो ,खुमान रासो ,विजयपाल रासो ,कीर्ति पताका।

श्रृंगार- बीसलदेव रासो।

७. जनजीवन के चित्रण का अभाव-

चारण कवियों के इस काल के ग्रंथों में सामंती जीवन उभर कर आया है।

साधारण जन -जीवन और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को इन कवियों ने भुला दिया है।

८. प्रकृति वर्णन-

आलंबन रूप

उद्दीपन रूप

प्रकृति वर्णन नीरस और सुस्त है।

९. वास्तु वर्णन-

रण- सज्जा,आक्रमण ,युद्ध, विवाह, नख शिख वर्णन ,जल क्रीड़ा , आखेट,ऋतु वर्णन ,नगर आदि।

१०. धार्मिक व लौकिक साहित्य-

जैन साहित्य ,सिद्ध साहित्य , नाथ साहित्य।

लौकिक साहित्य में खुसरो व विद्यापति का काव्य।

११. काव्य के दो रूप-

प्रबंध काव्य- रासो साहित्य (पृथ्वीराज रासो खुमान रासो)

मुक्तक-अमीर खुसरो का काव्य , विद्यापति की पदावली।

१२. विविध छंदों व अलंकारों का प्रयोग-

छंदों की विविधता के लिए यह काल सर्वोपरि है-

प्रमुख छंद - दोहा ,रोला, तोटक ,तोमर, छप्पर ,गाथा आदि।

शब्दालंकार -अनुप्रास, यमक।

अर्थालंकार -उपमा ,रूपक ,उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति।

१३. डिंगल- पिंगल भाषा का प्रयोग-

डिंगल इस काल की मुख्य भाषा है।

कुछ लोग इसे अब भ्रंश का नाम भी देते हैं

डिंगल- अपभ्रंश +राजस्थानी

पिंगल -अपभ्रंश+ ब्रजभाषा।

THANKS